UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 04 | January – March 2018

श्री अरबिंदो के सामाजिक और राजनीतिक विचार : एक विवेचना

Dr. Anita kumari
Assistant Professor in Hindi
Vaish college of law, Rohtak

सार

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा 20वीं के प्रारम्भिक वर्षो में भारतवासियों में जिस सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चेतना का उदय हुआ था, उसके लिए पुर्नजागरण आन्दोलन के नेताओं ने अथक प्रयास किया था। भारत में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में जिस चेतना का अभ्युदय हो रहा था वह एक नवीन चेतना थी, उदारवाद की जगह क्रान्ति थी। जिस समय भारतीय कांग्रेस पर उदारवादियों का वर्चस्व स्थापित था, उसी समय श्री अरविन्द घोष जैसे उग्र राजनीतिक क्रान्तिकारी भारतीय राजनीतिक मंच पर अवतरित हुए।

मुख्य शब्द : सामाजिक और राजनीतिक विचार धार्मिक क्रान्तिकारी इत्यादि।

प्रस्तावना

श्री अरविन्द अपने दार्शनिक विचारों में राजनीति और धर्म दोनों को अलग-अलग प्रयोग न करके धार्मिक-राजनीति की बात करते हैं। उन्होंने अपने विचारों में धर्म एवं राजनीति का संगम करके एक नवीन धारा को जन्म दिया। उनके राजनीतिक-थधार्मिक दर्शन का भव्य प्रसाद ही धर्म और राजनीति के अपूर्व गठबंधन पर निर्मित है। उनकी राजनीति धर्म-प्रमाणित राजनीति थी जहां राजनीति तथा धर्म परस्पर संघर्षमयय न होकर सहयोगमय भूमिका निभाते हुए विकास और सुन्दरता का दिव्य दर्शन कराते है। यही कारण है कि हमे उन्हें आध्यात्मिक राजनीति का प्रणेता मानने के लिए विवश हो जाते हैं।

श्री अरविन्द के राजनीतिक विचारों पर धर्म का प्रभाव भारतीय राजनीतिक विचारधारा के लिए कोई अद्भुत खोज नहीं है। भारत में प्राचानकाल से ही धर्म-अनप्राणित राजनीतिक व्यवहार का प्रचलन था। वास्तव में वैदिककाल से ही राजनीति का अध्ययन धर्म के अंग के रूप में किया जाता रहा है। धर्म मानव-जीवन की आचार संहिता माना जाता था इस आचार-संहिता के अन्तर्गत राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्य तथा प्रजा का राजा एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भी सम्मिलित था। सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन के क्षेत्रों में भी समाज एवं राज्य के अंगों का परस्पर सम्बन्ध हैं।

उद्देश्य

श्री अरबिंदो के दर्शन में राजनीतिक और सामाजिक विचार धर्म संबंधी राष्ट्रवाद, समानता के पक्षधर, उपनिवेश के विरोधी अंतरराष्ट्रीय राष्ट्रवाद, निष्क्रिय प्रतिरोध स्वदेशी का प्रसार व विदेशी का बहिष्कार आदि का अध्ययन।

श्री **अरबिंदो के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार**

उनके राजनीतिक विचारों का निम्नलिखित श्रेणियों में वर्णन किया जा सकता है-

- **निष्क्रिय प्रतिरोध**

अरबिंदो ने निष्क्रिय प्रतिरोध का विचार आयरलैंड के निष्क्रिय प्रतिरोध से लिया. उनका निष्क्रिय प्रतिरोध गाँधी जी के निष्क्रिय प्रतिरोध से बिल्कुल भिन्न है. उनके अनुसार निष्क्रिय प्रतिरोध अहिंसात्मक होना चाहिए लेकिन अगर सरकार निर्दयी हो जाये तो हिंसा का प्रयोग करने से भी नहीं चूकना चाहिए क्योंकि अत्याचारों को सहना कायरता है. लेकिन उनका मानना था कि हिंसा प्रयोग अंतिम मार्ग है और हिंसा का रूप ऐसा न हो जिससे किसी को हानि हो बल्कि आत्मरक्षा के रूप में ही इसका प्रयोग किया जाना चाहिए. उनके अनुसार निष्क्रिय प्रतिरोध निम्नलिखित आधार पर होना चाहिए-

- **स्वदेशी का प्रसार व विदेशी का बहिष्कार**
  - ✓ सरकारी शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार कर राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार
  - ✓ सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार
  - ✓ ब्रिटिश सरकार द्वारा गठित सभी संस्थाओं का बहिष्कार
  - ✓ जनता द्वारा सरकार का बहिष्कार.
  - ✓ व्यक्तिगत स्वतंत्रता

उनके अनुसार किसी भी समाज या देश में तीन प्रकार की स्वतंत्रताओं का होना ज़रूरी है -

- **राष्ट्रीय स्वतंत्रता(विदेशी नियंत्रण से मुक्ति)**

आन्तरिक स्वतंत्रता(किसी वर्ग या समूह विशेष के सामूहिक नियंत्रण से मुक्त स्वशासन) व व्यक्तिगत स्वतंत्रता(राष्ट्रीय चेतना की जाग्रति का मार्ग).

उनके अनुसार व्यक्तिगत स्वतंत्रता सभी प्रकार की स्वतंत्रता की पूर्व शर्त है लेकिन विदेशी शासन की मौजूदगी में इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता और चूँकि व्यक्तिगत स्वतंत्रता से ही व्यक्ति में राष्ट्रीय चेतना का विकास होता है इसलिए इसके बिना अन्य दोनों स्वतंत्रताओं को भी प्राप्त नहीं किया जा सकता.

- **अधिकार**

अरबिंदो घोष ने तीन प्रकार के अधिकारों का समर्थन किया है -

स्वतंत्र प्रेस और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता-हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति का अधिकार प्राप्त होना जरूरी है क्योकि कोई भी विचार अभिव्यक्त होकर मूर्त रूप धारण करता है तथा किसी भी संस्था, प्रशासन या सरकार को चलाने में विचार ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है. स्वतंत्र प्रेस विचारों का प्रसार जन-जन तक करता है.

स्वतंत्र सार्वजानिक सभा करने का अधिकार-यह अधिकार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का पूरक है.

संगठन निर्माण का अधिकार व्यक्ति अकेला विकास नहीं कर सकता बल्कि समूह में रहकर ही उसे अपना विकास करना होता है. इसलिए एक स्वतंत्र राष्ट्र के लिए यह अधिकार आवश्यक है.

- **राष्ट्रवाद**

उन्होंने राष्ट्रवाद को अध्यात्म तथा मानवता से जोड़ा है. अरबिंदो को उस समय का सबसे सफल राष्ट्रवादी भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने उदारवादियों की आलोचना कर अपने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के द्वारा देशभर में एक नए उत्साह को उत्पन्न किया. उनके अनुसार मनुष्य चाहे कितने भी तरह से भिन्न न हो परन्तु राष्ट्र प्रेम उसे एकता के सूत्र में बाँध देता है. वे कहते हैं कि “राष्ट्रवाद ही राष्ट्र की दैवीय एकता है”. उनके राष्ट्रवादी विचार उनके लेख “वन्देमातरम्” में मिलते हैं.

- **मानव एकता अथवा विश्व एकता**

वे सर्वधर्म सम्मान व एकता में विश्वास करते थे तथा विश्व संघ निर्माण का समर्थन करते थे. उनके अनुसार मानव एकता प्रकृति की देन है, तभी तो मनुष्य निरंतर सामाजिक संस्थाओं का विकास करके एकता के सूत्र में बँॅधा रहा है, जैसे परिवार, कबीला व राज्य.

सामाजिक विचार

1. धर्म संबंधी राष्ट्रवाद
2. समानता के पक्षधर

3.उपनिवेश के विरोधी

4. अंतरराष्ट्रीय राष्ट्रवाद

श्री अरविन्द ने भारतीय वेदान्तवाद को राजनीतिक क्षेत्र में लागू किया। उनका सम्पूर्ण दर्शन ही मानव के परम् लक्ष्य की प्राप्ति है। परम लक्ष्य यानि आध्यात्मिक भारत / आध्यात्मिक

मानव। आज पृथ्वी पर चारों ओर श्री अरविन्द दर्शन समझने का आग्रह दिखाई दे रहा है। श्री अरविन्द ने वह नवीन ज्योति प्रज्जवलित कर दी जिसकी दर्शन के क्षेत्र को बहुत समय से आवश्यकता थी। धर्म और राजनीति का अनोखा सम्मिश्रण ही विकास एवं प्रगति का वास्तविक दर्शन करायेगा। इनका अलग-अलग अस्तित्व तो मात्र संघर्ष होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री अरविन्द मानव से अतिमानव की ओर अनुवादक- वन्दना अनुबने श्री अरविन्द सोसायटी पाण्डिचेरी
2. श्री अरविन्द गीता प्रबन्ध अनुवादक- जगन्नाथ वेदालंकार श्री अरविन्द सोसायटी, पाण्डिचेरी
3. श्री अरविन्द दिव्य जीवन अनुवादक- श्याम सुन्दर, झुनझुनवाला श्री अरविन्द सोसायटी पाण्डिचेरी- 605002
4. श्री अरविन्द अपने विषय में अनुवादक- जगन्नाथ वेदालंकार श्री अरविन्द सोसायटी पाण्डिचेरी-- 605002
5. श्री अरविन्द प्रार्थाा और ध्यान श्री अरविन्द सोसायटी पाण्डिचेरी-- 605002
6. श्री अरविन्द मानव एकता का अनुवादक- लीलावती इन्द्रसेन आदर्श-युद्ध और आत्म श्री अरविन्द सोसायटी निर्णय पाण्डिचेरी-- 605002
7. श्री अरविन्द मानव चक्र अनुवादक- लीलावती इन्द्रसेन श्री अरविन्द सोसायटी. पाणज्डिचेरी- 605002
8. मनोजदास महान योगी श्री अरविन्द अनुवादक- शंकर लाल पुरोहित नेशनल बुक ट्रस्ट आफ इण्डिया, नई दिलली।